





The wise sayings
of

LALESHWARI

(Lalla-Vakyani)

Hindi-English Edition

PART I.

By

S. N. CHARAGI B. A., L. T.

Srinagar, Kashmir.

Printed & published
by
TRUST PUBLISHING HOUSE
SRINAGAR.
AT
K. STANDARD PRESS SRINAGAR

1st. Edition 1000 1996 Price. Annas four.

PREFACE

It is perhaps the first time in the history of Kashmir Literature that the philosophic and the spiritual works of Laleshwari, the great hermitess of Kashmir, better known as Lal Ded, are made available to the public both in Hindi and Urdu. The precious sayings of Lal Ded, the heroine of ancient religious culture in Kashmir, are a treasure of immense value for all. I consider myself very fortunate in having been able to collect a large number of her sayings in addition to those already published by Sir George Grierson, Dr. Lionel D. Barnett, Sir Richard Temple P. Anand Koul and Bhaskaranand's commentary published by the Research Department of the Kashmir Government. The sayings already current have been included in my four volumes, with an addition of over 240 new sayings, which lay hidden and unexplored so far. I must express my thanks to all friends who have been very kind and liberal in helping me in the collection of the old manuscripts of these spiritual jewels. Among the many friends who helped me besides getting old manuscript copies, with their valuable advices and expression of ideas on the meanings of the mystic sayings, may be mentioned the names of Pt Makund Ram of Chandragam, Swami Vidhadhar Ji Maharaj, Pt. Nila Kanth Sahib Wanchoo and Pt. Prithvi Nath Sahib 'Pushp'. No stone has been left unturned in making a thorough search throughout the length and

breadth of Kashmir Valley and whatever saying have been procured are placed before th kind readers with a humble appeal to kindl favour me with any additional sayings tha they may be able to supply and make suggestior for the improvement of the publications which sha be thankfully received and incorporated in th second edition.

S. N. Charagi.



अकुय ओंकार युस नाभि धरे
कुम्बय ब्रह्माण्डस स्वम गरे ।
अकुय मन्त्र युस च्यतस करे
तस सास मन्त्र क्याह् जन करे ॥ १ ॥

एक ओंकार को जिसने नाभिस्थान में धारण किया, अपने आपको जिसने ब्रह्माण्ड के समान समझा,एक ही मन्त्र 'ॐ' का जिसने चिंतन किया– उसको हज़ार मन्त्र से क्या काम है ? ॥

He from whose navel proceeds the one syllable of Aum, he who considers himself equal to the whole universe, he who bears in mind this one spell Aum' —— to him a thousand spells are of no good.

अब्यांसी सविकास लय वथू
गगनस सगुण म्यूल समिब्रटा ।
शून्य गोल तु अनामय म्वतू
युहुय उपदेश छुय भटा ॥ २ ॥

योगाभ्यास से संसार का प्रपंच ब्रह्म में लय हो जाता है, मानो सगुण शून्य अर्थात् निर्गुणमें लीन होजाता है शून्य भी जब विलीन होजाता है तो अनामय परमात्मा ही शेष रहता है – हे मनुष्य (ब्रहमण) सच्चा उपदेश यही है ॥

When by practices of Yoga the visible becomes invisible, the universe merges within the ether, then every-thing having gone to absorption there remains only the Supreme Being. This is, O Brahman, the true doctrine.

हासा बोल परिनम सासा
म्यं मनि वासा खेद् ना ह्ययेे ।
युद्वय शंकर बखच आसा
मकुरिस[†] स्वासा[°] मल क्याह प्ययेे ॥ ३ ॥

मुझे कोई मुंह हज़ार गालियां सुना दे मेरे मन में खेद न होगा यदि मैं शंकरभक्त हों। भला आईने पर मैल जमकर उसका कुछ बिगड़ता है ? ॥

Anybody may jeer me a thousand times, pain will never find abode within my heart. If I am a devotee of Shiva, how can a mirror be fouled if a few ashes fall upon it ?

अज़ान[§] आय तु गछुन गछ़े
पकुन गछ़े दिन क्योह राथ ।
योरय आय तूर्य गछुन गछ़े
केंह न तु केंह न तु केंह न तु क्याह ॥ ४ ॥

अनादि से हम आए हैं और अनन्त में हमको जाना चाहिए। दिन और रात हमें इसी की ओर चलते रहना चाहिए। जहां से हम आए वहीं जाना भी चाहिए। कुछ नहीं कुछ नहीं यह संसार कुछ नहीं ॥

We came and came and have to go back. We must move on night and day. Where from we have come there must we go. It is nothing, it is nothing, nothing, nothing.

---

† Looking-glass ° ashes § Infinite or the beginningless.

अंसिय आंस्य तु अंसिय आसव
असिय दोर कर्य पतुवथ ।
शिवस सोरि नु ज्योन त मरुन
रवस† सोरिय नु अतुगथ‡ ॥ ५ ॥

त में हम ही थे और भविष्य में हम ही होंगे । हमने ही अनादिकाल दौर किए हैं । शिव का जीना मरना कभी समाप्त न होगा । न सूरज का उदय होना और अस्त होना रुक जाएगा ॥

We existed in the past and we shall exist in ie future, we had pleasant times in the past. ut death will never cease for Shiva and rising nd setting will never cease for the Sun.

आयस ति स्योदुय त गछु ति स्योदुय
स्यंदिस होल म्यं कर्यम क्याह ? ।
बं तस आंसुस आगरय व्यंदुय§
व्यदिस तु व्यान्दिस° कर्यम क्याह ? ॥ ६॥

ई भी मैं सीधी ही और जाऊंगी भी सीधी ही मुझ सीधी सादी कोई कुटिल क्या विगाड सकता है ? मैं आगे से ही उससे चित थी । मुझ परिचय वाली और प्रेमी को वह क्या करसकता ?

I came straight and shall go straight. I am raightforward, what can a crooked person do to e? I was known to Him from the very begining hat will do He to me ,His acquaintance and dear e.

---

† The Sun. ‡ Rising or setting. § Known. ° Dear one

अजपा गायत्री हम्स हम्स‡ जंपिथ्
अहं त्रांविथ सुय अद् रठ ।
यंम्य त्रोव अहं सुय रूद् पानय
ब न आसुन छुय उपदेश ॥ ७ ॥

गायत्री मंत्र का प्रत्येक सांस में जाप करो, अहं भाव को त्यागो और 'सो' अर्थात उस तत्वरूप ब्रह्मको ध्याओ जिस ने अहंभाव को त्यागा वही जीवित रहा 'मैं हूं' इस भाव को मिटाना ही सबसे बडा उपदेश है ।

Recite the Gayatri Mantra in every breath. Leave all attachment to the self and hold Him fast He only remains who leaves love for the self. The true doctrine is to leave self-love or 'I am'.

आयस कमि दिशि तु कमि वते
गछुह कमि वति कव ज़ानु वथ ।
अन्तिहि दाय§ लगि म्यं तते
छम छनिस फोकस कुस सन सथ ॥ ८ ॥

मैं किस देश से आई और किस रास्ते से, मैं किस रास्ते जाऊंगी और कैसे राह को पाऊंगी ? अन्तमें मुझे वहीं अच्छा उपदेश मिलेगा । मेरे इस शून्य सांस की क्या सत्ता है ? ॥

1 came from what quarter and by what road whence shall I go and how shall I know the way. In the end, I shall gain good counsel there, what substance is there in an empty breath ?

‡ In every breath § Good counsel

आयस वते गयस न वते
स्यमन्ज़ सोथे लूस्तुम दोह।
चन्दस वुछुम हार न अथे
नावु तारस दिम क्याह बोह ॥ ९ ॥

मैं ठीक रास्ते तो आई, पर ठीक रास्ते पर नहीं चली, सत्थू पर ही सूर्यास्त हुआ, जेब में हाथ डाला तो कौडी वी न पाई भला नाविक को पार लेजाने की क्या उजरत दूं ?

I came by a way but did not return by that way. The day failed while I was yet walking on the embankment. I searched my pocket but could not find a single cowry. What shall I pay for the ferry-fee?

आगरय ओ़ज़ुम
वुग्वानि‡ डूर सो़गुम।
ओर्के कृपाथि जगथ वुज़ुम
योर् ति केंह म्यं सो़रुम नो ॥१० ॥

मैं स्रोत अर्थात मुम्बा से ही गरजती रही, मैंने सैलाब के पानी से खेती को सींचा, परमात्मा की कृपा से मेरे मनमें जगत का ज्ञान उमड आया, अपनी ओर से तो मैं ने किसी वस्तु की भी धारणा न की ॥

I roared as a river does at the source and I irrigated the field with flood-water. By the mercy of the Supreme Being the world got awakened for me and as for myself I did not meditate on anything.

‡ The flood-water which does not last long.

असे प्वन्दे ज़ासे ज्वसे
न्यथुय करे स्नान तीर्थन ।
वहर्य वहरस नोनुय आसे
निशि छुय तु परज़ुनावतन ॥ ११ ॥

जो हंसता है, छींकता है, अंगडाई लेता है, खांसता है, नित्य तीर्थ
स्थानों पर स्नान करता है और साल भर प्रकट रहता है, वह
तेरे पास ही है, उसे पहचान तो सही ॥

It is He who laughs, sneezes, yawns, coughs. bathe ceaselessly at holy places and remains visible throughout the year. Recognize Him, He is near you.

अंन्दरिय आयस चंन्दुरय गारान[†]
गारान आयस हिहथन हिहथ ।
चुयय नाराण चुय अथु धाराण
चुयय माराण यिम कम विहथ ॥ १२ ॥

अन्दर से मैं चाँद को खोजते खोजते बाहर आगई और अप
जैसों को ढूंढती रही, अनुभव हुआ कि तू ही नारायण है औ
तू ही भिक्षुक के रूप में हाथ पसारता है, तू ही मारनेवाला भ
है, तेरी यह लीला कितनी अद्भुत है ॥

I came out from the inner soul searching the moonlight. I tried to find out like ones. O, Narayan You are all and You stretch forth your hand. You are also the destroyer and what are all these sports

---

† Making a thorough search.

आंसुस कुनिय तय सांपनिस स्यठा
नज़दीख आंसिथ गयस दूर ।
ज़ांहिर बांतिन कुनुय ड्यूठुम
गयम ख्यथ च्यथ ५४ चूर ॥ १३ ॥

केवल थी और अनेक होगई; नज़दीक होकर भी दूर हो गई,
न्दर और बाहर मैंने एक ही ब्रह्मको देखा, चोपन चोर मुझे खा
कर चले ॥

I came all alone and became many. I was near Him and have become very distant. I found Him verywhere visible and invisible. Having eaten and runk to the fill I have been deceived by fifty-four hieves.

अन्दर आंसिथ न्यंबर छोंडुम
पवनन रगन करनम सथ ।
ध्यानु किञ दय ज़ागि कीवल ज़ोनुम
रंग§ गव संगस° मीलिथ क्यथ ॥ १४ ॥

न्दर होते हुए भी मैंने उसे बाहर ढूंढा, पवन ने मेरी रगों को सल्ली दी; और ध्यान से मैंने जगतभर में परमात्मा को केवल ाना, यह सारा प्रपंच(रंग) ब्रह्म में लय (मीलित) हो गया ॥

Though within I searched for Him without. The ital airs satisfied my veins. Through meditation nly I found God alone pervading the whole world. he world got merged into the union with the upreme Being.

---

§ The world ° The Supreme Being

ओरु ति पानय योरु ति पानय
पोत वाने रोजि नु जाह ।
पानय गुप्त तु पानय ज्ञाणी
पानय पानस मूद नु जाह ॥ १५ ॥

उधर भी वह स्वयं ही है और इधर भी स्वयं ही है, कभी भी पीछे नही रहनेका, आप ही वह गुप्त (छिपा) है और आप ज्ञाणी (अपने आपको जानने वाला) है, स्वयं वह कभी मरा न अर्थात् वह अमर है

That side He is Himself and this side too He Himself. He will never remain behind. He is Himse invisible and Himself Omniscient. He is Omnipote and never dead to Himself.

ओरु ति पानय योरु ति पानय
पानय पानस छुनु मेलान ।
पृथम अच्युस नु मुलेह दानिय
सुय हा मालि चुय आश्चर ज़ान ॥ १६

उधर भी आप ही है और इधर भी आप ही है, फिर भी आप अपने को नही मिलता, उसमें तो ज़रा-भर भी नहीं समा सकत हे तात (मनुष्य) ! उसी आश्चर्य को तू विचार ॥

That side He is Himself and this side too He Himself. He Himself does not join with Himse At first not even a grain will penetrate into Hi That, O man! is a wonder, meditate upon it.

ऊँकार यलि लयि आनुम
वुहिय कोरुम पनुन पान।
श्यं वत त्रॉविथ तु संथमार्ग रोटुम
त्यलि लल बं वाचुस प्रकाशस्थान ॥ १७ ॥

ङ्कार को जब मैंने अपने आपमें लय किया; अपने शरीर को
स्म किया; और छः रास्तों को तय करके सातवें अथवा सत्य के
र्ग को ग्रहण किया तो तब ही मैं लल प्रकाश के स्थान पहुंची ॥

I brought'Aum' under my control by concentra-
on. I burnt my body like a blazing coal. I gave up
e six* paths and got to the seventh.° Then I Lalla
ached the place of illumination.

कन्न छुख दिवान अनिनुय बछ़
त्रुकय छुख अन्दरय अछ़।
शिव छुय अत्य तय कुन मो गछ़
सहज़ु कथि म्यानि करतो पछ़ ॥ १८ ॥

यों व्यर्थ ही हाथों से टटोल रहा है? यदि तू बुद्धिमान् है तो अपने
अन्दर प्रवेश कर, शिव तो वहीं है कहीं और उसकी खोज में न
, हे ब्रह्मण मेरी इस बात पर तू विश्वास तो कर ॥

Why are you feeling with your hand like a blind
erson? If you are wise get inside. Shiva is there, do
ot go anywhere else. O. Brahman! believe my word.

Six chakras; or wrath, lust, desire, arrogance, dellusion and jealou-
. ° The seventh and the highest station; or the truthful persons.

कुस हा मालि लूसुय नु पकान पकान !
कुस हा मालि लूसुय न वोल्गान[§] सुमेरु !
कुस हा मालि लूसुय नु मरान तु ज़्यवान
कुस हा मालि लूसुय नु करान न्यंन्द्‌था? । १

तात ! कौन चलते २ नहीं थका ? कौन सुमेरु को लाँघते २ नहीं थका ? कौन मरते और जन्मते नहीं थका ? कौन निन्दा कर २ नहीं थका ?

Who, O man, is not tired of going and going? Who, O man, is not tired of going round Sumeru? Who, O man, is not tired of dying and being reborn? Who, O man, is not tired of backbiting?

जल हा मालि लूसुय नु पकान पकान
सिरियि लूसुय न वोल्गान सुमेरु ।
चंन्दरम लूसुय नु मरान तु ज़्यवान
मनुष्य लूसुय नु करान न्यंन्द्‌था ॥ २०

तात ! जल चलते २ (बहते २) नहीं थका, सूरज सुमेरु को लाँघते २ नहीं थका, चन्द्रमा मरते और जन्मते नहीं थका, और मनुष्य निन्दा करते २ नहीं थका ।

Water in a river is not tired of going and going (flowing). The Sun is not tired of going round Sumeru. The Moon is not tired of dying aud being reborn and man is not tired of backbiting.

---

† To cross or go round.

कुस मारितय कसू मारन ?
मारि कुस तय मारन कस ? ।
युस हर् हर् त्राँविथ गर् गर् करे
अद् सुय मरे तु मारन तस ? ॥ २१ ॥

ौन मरेगा और किसको मारेंगे ? मरेगा कौन और मारेंगे किसे ? ा हर २ अर्थात् शिवके चिन्तन को छोड घर के धन्धों में फसेगा ही मरेगा और उसी को मारेंगे ।

Who will die and whom will they kill? Who ill kill and who will be killed ? He who leaves hiva and increases his attachment to home, he will ie and he will be killed.

कुस पुश ताँय कस् पुशाञी
कम कोसम लागिज़ियस पूज़े ।
कमि सर् गोड दिज्यस जलधांनी
कवुसनु मन्त्र शंकर वुज़ें† ॥ २२ ॥

ौन माली है और कौन है मालन ? कौन से फूलों से उसकी पूजा रें ? किस झील से उस पर जल चढाया जाय और किस मन्त्र से ांकर का ज्ञाण हो ? ।

Who is the man and who the woman who bring flower wreathes? What flowers should be offered to Him in worship? From what lake should water be brought to be poured over his image. By what mantra will Shiva Himself be mani-est?

† Awake, become manifest.

कुष पोष तिल दीफ जल ना गछे
युस सद्भाव गुरकथ मनि ह्यये ।
शम्भुहस स्वरि पननि यछे
सुय सथ दपिज़े सहज़ा क्रय ॥ २३ ॥

कुशा, फूल, तिल, दीफ, और जल की उसे ज़रूरत नहीं, जो स्व
भाव से शम्भूका स्मरण करे, उसी की क्रिया को सच्ची क्रिया कह

Kusha grass, flowers, sesame seed, lamp an water are not wanted, by him who has full con fidence in the word of his guru. He who meditat of his own longing upon Shiva, that is the true actio and he will attain bliss.

मन पुश तांय यछ पुशांनी
भावुक्य कोसम लांगिज़्यस पूज़े ।
शशि रसु गोड दिज़्यस ज़लधांनी
छ्वपि मन्त्र शंकर वुज़े ॥ २४ ॥†

मन है माली और इच्छा है मालन, भावना रूपी फलोंसे उसकी पूजा करना, चन्द्रमा का अमृत रूपी रस का ही जल उस पर चढाना और मौनरूपी मन्त्र से ही शंकर को अपने अन्दर जगाना ॥

Mind is the man who brings wreaths of flo wers and desire is the woman who brings the wreaths of flowers. Offer the flowers of devotion to Him. Pour over his Image the nector of the moon Shiva will Himself be manifest by the mantra of silence

† No. 22 is the questionaire and No. 24 is the answer.

गुर शब्दस युस यछ् पछ् भरे
ज्ञान वगिह रटि च्यथ तोरगस† ।
इन्द्रय शोमारिथ आनन्द करे
अदु कुस मरितय मारन कस? ॥ २५ ॥

गुरु के शब्द पर जो पूरा विश्वास धरे, ज्ञानरूपी लगाम से चित्तरूपी घोडे को रोके और जो इन्द्रियों का शमन करके आनन्द पाए तब भला कौन मरे और किसको मारे?

He who has love and confidence on the word of the Guru, he who controls the horse of mind by the bridle of knowledge, he who enjoys peace having subdued his senses, then who will die and whom will they kill?

केंह छिय न्यन्दरि हंतिय वुदिय§
केंच़न वुद्थन न्यसर प्यथि ।
केंह छिय स्नान कंरिथ अपूतिय
केंह छिय ग्रह बंजिथ ति अक्रायि ॥ २६ ॥

कई तो निद्रालू होते हुए भी जाग्रत ही होते हैं और कई तो जाग्रत हुए भी निंद्रित ही हैं, कई तो स्नान करके भी अपवित्र ही हैं और कई तो ग्रहस्थ होते हुए भी अक्रिय (क्रिया के बन्धनों से मुक्त) हैं ।

Some though asleep are awake and others though awake have gone to slumber. Some are unclean althogh they have bathed, others are free from action although they are busy in houshold cares.

† Horse § Awake

क्षाडान लूसुस पानिय पानस
छ्यंपिथ ज्ञानस वोत नु कुंह।
लय करमस वोचुस मय खानस
बर्ये बर्ये बानु तु च्यवान नु कुंह ॥ ३१

अपने आपको ढूंडते २ मैं तो हार गई, उस गुप्त
तक कोई न पहुंचा, पर जब मैंने (अपने आपको उसी
में) लय किया तो मैं (ऐसे) अमृतधाम में पहुंची
प्याले तो भरे पडे हैं और उन्हें पीता कोई नहीं।

I searched for myself and wearied mysel[f in] vain, but no one has reached that hidden Kn[ow]ladge. I then absorbed myself in it and reac[hed] the abode of nector. I found there many fi[ne] jars but none drinking from them

गगन जायेय रुत्य† तय कुतिय§
करिथ वुद्रस बहु क्लेश।
फीरिथ द्वार भजीनि वोत्य तोतुय
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ३२

जननी से अच्छे और बुरे दोनों उत्पन्न हुए, दोनों ने
के पेट को बडीपीडा पहुँचाई, संसार में फिर कर हम
नः उसी स्थान पर पहुंच गए, शिव की प्राप्ति कठिन
इसलिए इस उपदेश को जान लो।

Good and bad were all born from their m[o]ther causing many a pang to her (mothers) wom[b]. Again and again they came there at the do[or]. Shiva is very difficult to be found, therefore me[di]tate on this doctrine.

† Good or comely § Bad or full of sap.

नाथ ना पान ना पर ज़ोनुम
सदा यि बोदुम' अकुय देह ।
चय बो बो चय म्युल ना ज़ोनुम
चह कुस बो कस छुह संदेह ॥ २९ ॥

थ! मैंने न अपने आपको जाना न पराये को, सदा ही रीरकी एकताको ही दृष्टिमें रखा, 'तू-मैं' और 'मैं-तू' ऐसा लाप मैंने नहीं जाना, तू कौन है और मैं कौन? यहां मेरे दिल में संदेह है ।

Lord! I have not known myself or the others always loved this body alone. That 'You are I' find 'I am You', and these are joined together, did not know. I doubt as to who I am and ou are.

चह ना बो ना ध्येय ना ध्यान
गय पानय सर्वांक्रिय मशिथ । सर्व क्रय
अन्यव ड्यूठुख केंह ना आनिय
गय सत लय पर पंशिथ ॥ ३० ॥

न तू है न मैं, न ब्रह्म है न ध्यान! सब क्रियायें वयं ही भूल गईं, अन्धों को तो कुछ भी नहीं सूझा, र सज्जन पर (ब्रह्म) को देखकर (उसी में) लय हो गए

There is no You and no I, no object of contemplation nor even contemplation. All actions ave been lost in forgetfulness. The blind folk did ot find any meaning in this, but when the wise aw the Supreme they became lost in Him.

Lored or mortified

कन्द्थव गृह त्यजि कन्द्थव वनवास
युथुय छुख तु त्युथुय आस ।
मनस धैर्य रठ सांपज़रव सुवास
क्या छुय मलुन सूर तय सास ॥ २७

कई शरीरधारियों ने घर त्यागे कइयां ने वन, तू जैसा है ही रह, मन में धीरज धर कर ही तू कृतार्थ होगा, राख मट्टी मलने की ज़रूरत ही क्या है।

Some have abondoned home and some h abondoned hermitage. Y.u remain as you Bring your mind under subjection and you attain peace. What use is it to rub ashes and on your body.

गगन चुय भूतल चुय
चुय द्यन पवन तु राथ ।
अर्घ चन्दुन पोष पोञ चुय
चुय सकल तांय लांगिज़िय क्याह ? ॥ २

आकाश तो तू ही है, पृथ्वी भी तू ही है, दिन पवन और भी तू ही है, अर्घ, चन्दन, फूल, और जल भी तू ही है, तू ही सब कुछ है तो भला तुझ पर चढायें क्या ?

You are heaven and You are the earth. You the day, the air, and the night? You are rice, the sandal, the flowers and the water, are everything and what can I offer to you.

दमादम कंरमस दमनहाले
प्रज्वलित प्रजल्योम †दीप[†] तु ननेयम ज़ाथ ।
अंन्दर्युम प्रकाश न्यबर छोटुम
गटि रोटुम तु कंरमस थफ ॥३३॥

रे धीरे मैं ने साँस क़ो अन्दर ही रोके रखा तो (मेरे अ-
र ज्ञाणका दीप) प्रज्वलित हो उठा और मेरी असलीयत प्र-
हो गई । अन्दर का प्रकाश मैं ने बाहर छिटका
या और अंधेरे में ही मैं ने उसे पाया और पकडे रखा ॥३३॥

Slowly I stopped my breath inside. By doing the lamp of my knowledge blazed up in me and to me real nature became known. I brought forth my inner light and in the darkness I caught hold of the reality and held it fast. 33.

दीव वटा देवर[§] वटा
हेरि बोन छु एकवाठ ।
पूज़ कस करख हूतु बटा ।
कर मनस तु पवनस[*] संघाठ ॥३४॥

व (की मूर्ति) भी पत्थर क़ी है और देवालय भी पत्थर
ा ही है, ऊपर से नीचे तक एक ही वस्तु अर्थात प-
र है । रे मूढ ब्रह्मण ? तू किसको पूजेगा तू [के-
ल] मन और अत्मा को एक कर ॥३४॥

An idol is made of stone and a temple too is made of stone. Both above and below (the temple and the idol) there is one stone. Which of those would you worship, O foolish Pandita? Bring about union between the mind and the soul.

†Lamp of knowledge § Temple * Soul.

दिन छ्याज़ि तु रज़नी आसे
भूतल गगनस कुन विकासे ।
चन्दुर्यराह ग्रोसुन मावसे
शि/व पूज़न ग्वाह चित्त आत्मसे ॥३५॥

दिन डूबेगा और रात आयेगी,भूमि आकाश की ओर फै[illegible]
अमावस्याको राहु को चन्द्रमा ने ग्रस लिया । अपने चित्त[illegible]
आत्मा को जान लेना ही शि/व की सच्ची पूजा है ॥ ३५ ॥

The day will be extinguished and the night [illegible] come. The surface of the earth will extend towards [illegible] heaven. On Amawasi the moon swallowed up the e[illegible] pse. To understand the real self through the illum[illegible] ation of mind is the true worship of Shiva. 35.

द्वादशान्त मण्डल यस दैवस थ'जुय
नासिक पवन अनाहत रव ।
स यस कल्पन* अन्तिह च'जिय
स्वयम दैव तु अर्चुन कस ॥३६॥

ब्रह्मरंध्रको जिसने शिव का स्थान जाना, प्राणवायुके (प्रवाह[illegible]
साथ २ जिसने अनाहद को सुना, और जिसकी वासनाएँ अन्दर[illegible]
मर्ई ही अन्दर मिट गईं — वह तो स्वयं ही देव है, शिवरुप है [illegible]
पूजा काहे की ? ॥ ३६ ॥

He who recoginzes Brahma Rundra as t[illegible] abode of the Supreme, he who understands the [illegible] ound of breath rising from the heart into [illegible] nose, he whose thoughts about his own self ha[illegible] fled away, he recognizes himself as the Suprem[illegible] therefore whom should he worship ? 36.

† Night, darkness; vanity, * Thoughts about ones own self

प्रथ्य तीर्थन गछान सन्या'स्य
ग्वारीनि स्वदर्शनु स्युल ।
चिंत्ता धीरिथ मव निष्पथ *ड्ञस
ड्यथ दूर अमुन न्यूल ॥३७॥

...संन्यासी लोग हर तीर्थ पर सुदर्शन (परमात्मा) की तलाश में जाया ...ते हैं । रे चित्त ! (मन) तू निरपथ न हो --- भटक न जा । दूर ... सब्जा गहरा नीला दिखाई पड़ता है ॥३७॥

An ascetic wanders from holy place to holy place ...search of the union between himself and the Supre- ...e. O my soul ! study through the mystery and be not ...believing that God is near you. The further you ...ok the more green will seem the bed of grass .37 .

मकुरस ज़न मल चोलुम मनस
अड्ह म्य' ल'भुम ज़नस ज़ान ।
सुय'खि ड्यूठुम निशि पानस
सोरुय सुय'ता'थ बो ना केंह ॥ ३८ ॥

...मेरा मन दर्पणकी तरह निर्मल हो गया और सारा मल दूर हुआ । तब ...पने आत्मा का परिचय पाया और लोगों में विख्यात हुई । उसीको ...जब मैंने अपने पास(अपने ही रुप में) देखा तो ज्ञात हुआ कि सब ...कुछ वही है और 'मैं' कुछ भी नहीं ॥ ३८॥

The impurity of my mind fled away as dust from a ...irror. Then did I realize the self and gained reputat- ...on among the people. When I saw that He was near ...me, then I realized that all is 'He' and 'I' am ...nothing .38.

* Go astray. † The supreme.

ललबो लूसुस छ़ाडान तु ग्वारान§
हल म्यु' करमस रसान श' तिय ।
वुछुन हयोस्मस ता' य डीठिमस बरन
म्य' ति कल*गनेयि ज़ि ज़ोगुमस त' तिय ॥ ३

गई मैं लल (परमात्मा को) खोजते २ थक गई मैंने तो सैंकडों
किए । जब मैं ने (उसके निवासपर) उसको ढूढां तो किवाडों को
पाया । परन्तु मेरी उत्सुकता बढती गई और मैं वहीं धरणा
बैठी ॥ ३९॥

I Lalla wearied myself seeking and search for Him. I laboured hard beyond my strength. I b n to look for Him but found the doors bolted. In longing for Him became fixed and I patiently wai there to gaze upon Him. 39 .

मल वोन्दि ज़ालुम
जिगर मोरुम ।
त्यलि लल नाव द्राम
यलि दल्य ता' विमस त' तिय ॥ ४० ॥

दिलकी मैल को मैंने जला दिया और मनको मैंने दमन किया ।
मेरा नाम लल प्रसिद्ध हुआ जब मैं वहीं (उसके आगे) धरणा
बैठी ॥ ४० ॥

I burnt all foulness from my soul and I slae d my heart full of desires. Then did my name Lalla spread abroad, when I sat just there wi bended knee . 40 .

§Searching * Longing, keen desire.

य'म्य लूभ मनमथ मद् मोरुन
तिमय मा'रिथ तु लोगुन दास।
य'मिय सहज़ ईश्वर गोरुन
त'मिय सोरुय व्युन्दुन सास'॥ ४१॥

ने लोभ , काम और अहंकार को वश किया और अपने आप
दासरूप में समझा। जिसने 'सहज़' ईश्वरकी खोज की, उसी ने
संसारको मट्टी (के बराबर)समझा ॥ ४१ ॥

He, who has slain desire, lust and pride and after
ying these highway robbers, has made himself the
vant of all, has searched out the real Lord, he has
und out that every thing in this world is ashes. 41.

यथ सरि सर्षप–फल ना व्यचे§
तथ सरि सकलो पोञ च्यन्।
मृग सृगाल गा'ण्डय ज़लहस्ती
ज्यन ना ज्यन त तातिय प्यन ॥ ४२ ॥

सर में सरसों का बीज तक नहीं समा सकता, तो भी इस में से सभी
व पानी पीते हैं। इस में मृग, सयार, गेंडे और समुद्री हाथी जन्मते
और गिर मरते हैं ॥ ४२ ॥

It is a lake so tiny that a mustard seed can not
nd any room in it, yet from it all creatures drink
ater. In this lake do deer, jackals, rhenoceros and
a elephants keep falling and falling as soon as they
e born. 42.

* Has understood † Ashes § Can be accomodated.

चित्त

चल़ चिल़ वोन्द्स भय मो भर
चांज़ च्यन्त करान पानय अनाद[†] ।
च्य' को जनन्य[§] ख्योद़ हरिथ कर
केवल तसुन्दुय तोरुक नाद़ ॥ ४३ ॥

हे चन्चलचित्त ! दिल में भय को स्थान न दे । परमात्मा स्व
तुम्हारा चिन्तन करता है । तुझे किसतरह ज्ञान होगा और कब
क्षुधा दूर होगी ? केवल उसीके बुलावे (अनुग्रह) की देर है ॥ ४३

Ah restless mind! have no fear in thy heart. G
Himself is taking your care. How shall you att
Knowledge and when shall hunger fall from you?
pend therefore only upon Him for salvation and w
for His call. 43.

गाल गडिन्यम बोल पडिन्यम
दंप्यन्यम तिह यस युथ रोचे ।
सहज़[*] कुसुमव पूज़ करिन्यम
बो अमलांज़ कस क्याह म्वचे ॥ ४४ ॥

चाहे कोई मेरी निन्दा करे चाहे प्रशंसा । जिसे जो पसंद् आए सो
डाले । फूलोंसे चाहे भले लोग पूजा भी करें (मुझे क्या?) मैं तो अ
(सुखदुखसे न्यारी) हों किसी को ऐसा करने से क्या लाभ ? ॥ ४४

Let any one jeer or cheer me. Let all say wh
they like. Let good persons worship me with flowe
I am pure, what can they gain by doing this. ? 44

† The beginingless. §By what means *Good persons

नाभिस्थानस च़ित ज़लवंञी
ब्रह्मस्थानस शिशिरून मुख।
ब्रह्माण्डस क्य नद् वहवंञी
तवय तुरुन हूह हाह गवतोत ॥ ४५॥

स्थान में तो दधकती हुई (जठर) अग्नि है और ब्रह्मस्थान में ठंडक। ाण्डसे प्राण अपानरुपी नदी बहती रहती है। इसी लिए "हू" सर्द और 'हा' गर्म ॥४५॥

The region of the naval is very hot by nature and region of brahma rundra icy cold. From brahma-dra proceeds the flowing river. Therefore huh is l and hah is hot. 45.

चिदानन्दस ज्ञान प्रकाशस
इमौ च्यूनुय तिम जीवन्ती मुक्ती।
विषमिस† संसारनिस पाशस
अबुध्यव§ गण्डशत् शत दितिय॥ ४६॥

ानन्द और ज्ञानस्वरुप ब्रह्म को जिनहोंने चीन्हा, वह जीवनमुक्त हैं। ररुपी विषम(कठिन) फांसी में मूर्खों ने सैंकडों गांठ लगा दिए॥४६॥

They who have gained experience of the Knowle-e light of that self which is compact of pure spirit d of bliss, they while yet alive have gained release m births. But the ignorant people have added hun-eds of knots to the tangled net of continued rebirth. 46.

† Intricate, tangled § The ignorant people.

लथि न्यंगि सराह सरिथ सरस
अकि न्यंगि सरस अर्शस[†] जाय।
हरमुख कौंसर अख सुम[§] सरस
सति न्यंगि सरस शून्याकार॥ ४७॥

तीन वार मैंने सरको भरा हुआ पाया, एक वार उसकी जगह आ
पर देखी। एक वार तो हरमुखसे कौंसरनाग तक एक पुल भी
देखा। सात वार संसार को शून्यमें लय होते देखा ॥ ४७॥

I found three times a lake overflowing. Or remember having seen the lake in the firmame remember having seen over a bridge from Harm to Kaunsar. I remembar seven times having seen whole universe a void. 47 .

तन्त्र गंल्य तांय मन्त्र स्वचे
मन्त्र गोल तांय स्वतुय चित्त।
चित्त गोल तांय केंह ति ना कुने
शून्यस शून्याह मीलिथ गव॥ ४८॥

तन्त्र गलने पर मन्त्र रह जायेंगे। मन्त्र भी लय होंगे तो चित्त
जायेगा। चित्त का भी विलय होगा तो कुछ भी नहीं रहेगा। शून्
में मानो शून्य मिलजायेगा ॥ ४८॥

Holy books disappeared and then only the my formula remained. The mystic formula disappea and the mind remained. When the mind disappea nothing was left anywhere. A void became merge to the void.

† Heaven. § Bridge.

भान[1] गोल ताय प्रकाश आव ज़ूने
चन्द्र गोल ताय स्वतुर चित्त ।
चित्त गोल तांय केंह ति ना कुने
गय भूर,भुवः, स्वर मीलिथ क्यथ ॥४६॥

अस्त हुआ तो चान्द निकल आया। चान्द भी छिप गया ता शेष रहा। चित्त भी लय हुआ तो कुछ न रहा। भू, भुव, स्व: मे लय होगए ॥४९॥

When the sun disappeared then came the moon-t. When the moon disappeared then only mind re-ined. When mind too disappeared then nothing left anywhere. Earth, ether, sky all got merged o Brahma. 49.

मूढव डीशिथ तु पंशिथ लाग
ज़ोर तु कोल अोतवोन ज़डरूप्य आस।
युस यिय दपिय तस त्युथ बोल
सुय छुय तत्वविदस[§] अभ्यास॥५०॥

जानकर भी तू मूर्ख सा रह, देखकर भी अधा ज्यों रह,सुनकर भी की चाल रह। तू जडरुप जैसा रह और जो जैसा तुझसे कहे, का वैसा मान ले। बुद्धिमान लोग इसी चाल से चलकर अभ्यास करके) सचे तत्त्व को जानते हैं॥५०॥

Though you have Knowledge be as a fool. Though u can see be as blind. Though you hear be as one af. In all things be as a non - sentient block. What anyone may say to you, say the same to him. It is s that is the true practice for obtaining the Knowl-ge of the basal truths. 50.

[1] The sun. § The Knowledge of the basal truths.

अव्यचारी पोथ्यन छि हव मालि परान
यिथु तोतु परान[†] 'राम' पंजरस ।
गीता परान तु हीथा लभान
परुम गीता तु परान छस ॥ ५१ ॥

हे तात! अविचारी लोग पोथियों को उसी प्रकार पढते है जिस प्र
पंजरे में तोता राम राम । गीता पढकर वह उसी का वहाना ब
(दिखावा करते है)। मैं ने गीता पढी है और पढती भी हूं ॥ ५१

The thoughtless are reading books, O father! jus
parrot repeats 'Rama, Rama' in the cage. They re
the Bhagwad Gita having a pretext to do so. I h
read the Bhagwad Gita and am still reading it. 51

आंचार हांज़नि हुन्द गयाम कनन
नदुर्य[§] छिवु तु हर्यायिव मा ।
ति बूज़ लक्यव तिम रुद्य वनन
चेनुन छुवु तु चीनिव मा ॥ ५२ ॥

आचार शक्ति की आवाज़ मेरे कान में आई, यहां सब कुछ न
इसे न खरीदो । यही(आवाज़) दानाओं ने सुनी और वे कहते
समझना है तो समझलेना ॥ ५२ ॥

The words of the 'Achar shakhti' sounded in my
that everything here is perishable, donot go,in fo
This voice was heard by wise and they said. This
hint, take it and act upon it,52.

† The parrot repeats 'Rama, Rama' without understanding. § L
lotus-stalk. Here it refers to perishable material world that whi
not last long.

आंचारि बिचारि व्यचार वोनुन
प्राण तु रुहन¹ हयांयिव मा ।
प्राणस बंजिथ मज़ा चुहुन
नढ्यं छिव तु हयंयिव मा ॥ ५३ ॥

चारशक्ति ने विचार की बात कही प्राण और अपाण का ध्यान पना चाहिये। प्राणोंको सेवन करके उनका मज़ा चखो। संसार पायदार (नश्वर) है, इसमें न फंसो ॥ ५३ ॥

s 'Achar shakhti' said after due deliberation that ye should understand outward & inward vital airs, nd by proper practices of the same should see the sults. This world is perishable, do not be deluded.53.

इमय श्यं§ च्यं तिमय श्यं म्यं
श्यामगला च्यं ब्योन टोठ्स छुह ।
इहुय भिन्नाभेद च्यं तु म्यं
चु शन स्वांमी बो श्यंयि मुषिस ॥ ५४ ॥

ईश्वर! (नीलकन्ठ) जो छः आपके हैं वही मेरे भी हैं। आप से अलग हो मैं संकट में पडी। आप और मुझ में तो यही भेद है कि आप 'छः' के स्वामी हैं और मैं इन 'छः' की भटकाई हुई हूं ॥ ५४ ॥

As you have six. I too have the same six. Without you, o God of dark blue Throat, I have fallen into misery. This is the only difference between you and me. You are the master of the six, while I have been led astray by the same six.54.

¹ Literally onion & garlick but here translated as breathing in and breathiug out. § Six is reference to five senses and mind.

ख्यथ गंरिडथ ना शमि मानस
ब्रान्त[†] इमव छांव तिम गय खंसिथ ।
शास्त्र बूज़िथ छु यमभंग क्रुथ[§]
सु न प्रोच़ तांय धन्या लूसिथ* ॥ ५५ ॥

खाने और कपडे पहनने से मन वश नहींहोता। झूठी आशा को जि
ने त्यागा उनही का उद्धार हुआ। शास्त्र को सुनकर जिनको वि
हुआ कि यमराज भयानक है और जिनपर झूठी आशा देने व
विश्वास नहीं करता, वही शान्ति प्राप्त करते हैं ॥ ५५॥

By eating and apparelling the mind does not i
peace. Those have gone up, who have given upo
false hopes. When they learn from the scriptures th
the fear of yama is terrible and when the lender d
not trust them, then alone they live at peace.55.

ज़ल थमवुन हुतवह तुरनावुन
उर्ध्व–गमन परिवर्ज़िथ च़र्यथ ।
काठ धेनि दुद श्रमावुन
अन्तिह सकलु कपट च़र्यथ ॥ ५६ ॥

बहते हुए जल को रोकना, बढती हुई आग को टंडा करना, अ
पाओं पर आकाशपर चलना, एक लकडी की गायसे दूध दुहने
प्रयत्न करना - यह सब बातें कपट भरी हैं और व्यर्थ हैं ॥ ५६ ॥

To stop flowing- water, to cool a raging fire
walk on ones feet in the sky, to labour at milking
wooden cow, are all in the end base jugglery.56.

† False hopes. § Terrible. * At peace.

चित्त तुरगु गगनि भ्रमवोन
निमेषि आकि छ़रिड योज़नलछ ।
चैतन्य वगि† यमय नु रटिथ ज़ोन्
प्राण अपाण फुटरिथ परखुच्य ॥ ५७ ॥

...रुपी घोडा गगन में भ्रमण करने वाला है (और) निमेष भरमें लाखों ...जन चक्कर काटता है। यदि मनुष्य इस घोडेको चेतनरुपी लगाम से न ...कता तो उसकी सब इंद्रियां वेकार हो जाती हैं ॥५७॥

The steed of the thoughts travels over the sky ...d traverses a hundred thousand leagues in a twin-...ing of the eye. If a man does not know how to con-...pol the horse by the bridle of consciousness, then the ...wheels (of the chariot) of his outward and inward vital the ...irs burn into pieces.57.

तूरि तुरि सलिल§ खव्ट तांय तूरि
ह्यस्य त्रिगय ब्यन अब्यन विमर्शा ।
चैतन्य रव भाति सब समे
शिवमय चराचर ज़ग पश्या ॥ ५८ ॥

...र्दी ने पानी का रुप छिपा लिया और उसे यख बनाकर तीनरुपों को ...प्रकट किया। विमर्श (सोच विचार) से देखा जाय तो इन में कोई भेद ...हते हीं। जब चेतन रुपी सूरज इनपर चमकता है तो यह सब समान ...देखते हैं और सारा चराचर जगत शिवमय भासता है ।५८॥

When the cold obtains mastery over the water, ...e water is turned into ice or snow. Thus there are ...ree different forms of the same but on deep thinking ...e find that they are not different. When the sun of ...nsciousness shines then the three become one and ...l animate and inanimate objects, in fact, the whole ...is seen as only Shiva.58.

कुस बब तय कस माजी
कमी लाजी बाजीबठ ।
काल्य गछक[†] कुहं ना बब कुहं नो माजी
ज़ानिथ कव लाजिथ बाजीबठ[§] ॥ ५६ ॥

कौन है बाप और कौन है मां ? किसने तेरे साथ प्रेम किया? समय आने पर तुम जाओगे तो न तेरा कोई बाप होगा न माता होगी, यह जानकर तुम क्यों प्रेम बढाते हो ? ॥५६॥

Who is father and who mother? Who made friendship with you? One day you will go aud then none is father and none mother. Knowing this why have you contracted friendship with them.59.

ख्यनु ख्यनु करान कुन नो वातख
न ख्यनु गछख अहंकारी ।
सोमुय ख्यं मालि सोमुय आसख
समि ख्यनु मुचरन्थ बरञन[*] तारी ॥६०॥

बार बार खाने से किसी ठिकाने पर न पहुंचेगा और न खाने से तू अहंकारी बनेगा । हे तात ! समरीति से खायेगा तो समभाव से रहेगा और असली द्वार भी खुल जायगा ॥६०॥ द्वार

By overeating you will not achieve anything and by not eating at all you will be conceited and you will consider yourself a great ascetic. Eat moderately, o Father! and you will be moderate. By eating moderately the doors will be unbolted for you.60.

† Die § Friendship or attachment. * Doors.

केंचन दित्यथम गुलालु थंचुय
केंचन ज़ोन्थम नु दिनस वार ।
केंचन छुञथस नाल्य ब्रह्म हचय
भगवान् चानि गंच नमस्कार ॥ ६१ ॥

कइयों को तो कई सन्तानें दीं, कइयों को देना तूने उचित न समझा : कइयों के गले तू ने ब्रह्महत्यारुपी पाप की फांसी डाली। हे भगवन तुम्हारी मायाको नमस्कार है ॥६१॥

To some you gave many sons, for some you did not find the opportune moment for giving a child. Some you haltered with a daughter. O Lord! I adore your greatness.61.

कन्डयो करख कन्डे कन्डें
कन्डयो करख कन्डी विलास[§] ।
भूगय मीठिय दितिथ यय कन्डे
अथ कन्डि रोज़ि सूर न तु सास ॥६२॥

हे शरीरधारी यदि तुझे (हर समय) शरीर की ही लगी रहेगी और इस शरीर को ही तू सजाता रहेगा, इसे मीठे २ भोगोंसे पुष्ट करता रहेगा तो (याद रख) यह शरीर मट्टी में मिल ही जायगा ॥ ६२ ॥

O.Possessor of body! if you talk of body at every time, if you are busy in adorning your body, if you give sweet feasts to this body, of this body there will remain neither dust nor ashes.63.

Body § Adorn.

स्वमन गारुन[1] मंज़ यथ कन्डे
यथ कन्डि दपान स्वरुप नाव ।
लूभ मूह चलिय शूभ यियि कन्डे
यथ कन्डि तीज़ तय सोर प्रकाश ॥ ६ ३ ॥

सच्चे मन से उस(ब्रह्म) को इस शरीर में खोज ले । इस शरीर का ना (परमात्म) स्वरुप है । लोभ मोह की निवृति पर इस शरीर में शोभ आएगी और इस से ज्ञाणका प्रकाश होगा ॥६३॥

Search Him (God) in this body with a good heart The name of this body is the Impersonal Suprem Being. When greed and ignorance will be dispelled then this body will acquire beauty, and then wil come the light and lustre of true Knowledge in thi body.63.

कालन काल ज़ोल युदवय च्यं गोल
वंन्दिव गह वा वंन्दिव वनवास ।
ज़ांनिथ सर्वे गथ प्रभू अमोल
युथुय ज़ानख त्युथुय आस ॥६४॥

यदि तूने समय पर मायाजाल का नाश किया तो गृहस्थ और वनवास को समान ही जान। यदि प्रभू की अलौकिक गति सर्वव्यापक जानली तो फिर जैसा जानेगा वैसा ही बनेगा ॥६४।

If in course of time you have destroyed or brought under control all your desires, then it is immaterial whether you live a homelife or a forest life. If you realize that the Supreme Lord is omnipresent and limitless, then as you know, so will you be.64.

†Search God.

केंचन रंज छय शिहिज बूनी
नेरव न्यंबर शुहुल करव ।
केंचन रंज छय बरु प्यठ हूनी
नेरव न्यंबर जंग ख्यंयव ।
केंचन रंज छय अदल तु वदल
केंचन रंज छय अदल छ्यय ॥ ६५ ॥

कइयोंकी स्त्रियां चिनार की तरह शीतलस्वभाव हैं, जिनके साये में हम विश्राम कर सकते हैं । कइयोंकी स्त्रियां द्वारपर ठहरे हुए कुत्तेकी तरह हैं जो समीप पाते ही हमारी टांग काट खाते हैं । और कइयोंकी स्त्रियां झगडालू हुआ करती हैं और कइयोंकी तो छेदवाले छप्पर जैसी हैं ॥६५॥

Some have wives like a shady chinar tree, if one goes out, he can cool himself under the shade. Some have wives like a bitch at the door, if one goes out he shall get his leg bitten. Some have quarrelsome wives always causing confusion and some have wives like the shade of a grass-roof full of holes.65.

आमि पनु सोदरस नावि छस लमान
कति बोज़ि दय म्योन म्यंति दियि तार ।
आम्यन टाक्यन पोञ ज़न शमान
ज़व छुस ब्रमान गरु गछ़ हा ॥ ६६ ॥

मैं (श्वासोच्छ्वासरुपी) कच्चे (नाज़ुक) धागेसे (संसाररुपी) समुद्रमें जीवनरुपी नावको खींच रही हूं। काश! दई मेरी सुनता और मुझे पार लंगाता! मैं वैसेही गलती रहती हूं जैसे कि कच्ची मिट्टीकी थालियां में पानी जज़ब होता है । मेरी आत्मा अपने घर जानेके लिए मचल रही है ।६६॥

I am towing a boat upon the ocean with an unt-

wisted thread. May God hear me and carry me over! I slowly waste away as water wastes in goblets of un baked clay. My soul is in a dizzy whirl, I wish I could reach my home.66.

कॉलिय सथ कोल गछ़न पातॉली
अकॉलिय ज़लमालु वर्षन प्यन ।
मामस टॉक्य तय मसकी प्यॉली
ब्रह्मण तु ग्रॉली इकवटु ख्यन ॥ ६७ ॥

कालक्रम से सात कुल पातालमें जाएंगे (नष्ट होंगे) और कलियुग में अकाल वर्षा होगी। ब्राह्मण और चांडाल मिलकर मांस और शराब का मज़ा लेंगे ॥६७॥

The time is coming, when seven generations will sink down to hell, when untimely showers of rain will fall and when brahmans and sweepers will take together plates of flesh and cups of wine.67.

कुनिरय बोज़ख कुनि नो रेज़क
कुनिरिन कोरनम हॉनियाकार ।
कुनुय ऑसिथ दोन हुन्द जंग गोम
सुय बेरंग[†] गोम कॅरिथ रंग[§] ॥ ६८ ॥

'एकान्त' का कीर्तन सुनेगा तो कहींका न रहेगा। 'एकान्त' होने ने तो मुझे कलंकित किया। अकेली होते हुए भी दो की जंग हुई। वही निराकार मुझे साकार बनाकर चला गया ॥६८॥

If you think of loneliness then you will remain nowhere. The loneliness has turned me into the universe. Being alone it became the quarrel of the two. That Formless Being went away after givin me a form (shape) .68.

† Supereme Being. § Body, form;

अटनुच सन दि्थ थावन मटन
लूभु बोछि बोलन ज्ञानुच गीत ।
फटय फटय नेरन तिम कति वटन
लकय मालि छुख पूर कड पथ ॥ ६९ ॥

(ठगां लोग) एक जगह से माल छीनकर दूसरी जगह धरते हैं वहां लोभ के अंधे ज्ञाणके गीत गाते हैं और लोगों को दिखावा करके छलते रहते हैं । भला वह इस संसार में क्या लेंगे ? तात ! यदि तू प्रबुद्ध है तो इन कामों से बाज़ आ ॥६९॥

Stealing property at Attan they carry it to Mattan and through excessive craving for greed recite the hymns of religion. They make themselves conspicuous and they can never gain. If you are wise, O, father! turn your steps back.69.

पर तु पान यंम्य सोमुय मोन
यंम्य हिहुय मोन दि्न क्योह राथ[1] ।
यंमिसुय अद्वय मन सांम्पुन
तांमिय ड्युठुय सुरगुरनाथ ॥ ७० ॥

जिसने अपना आप और पराया एक समझा, जिसने दिनरातको समान समझा । जिसकी द्रष्टिमें दूतका भाव मिट गया, उसीने गुरुराज शंकर का साक्षात्कार किया ॥७०॥ द्वैत का।

He who deems himself and another as the same, he who deems the day and night as alike, he whose mind has become free from duality,he verily has seen the Lord of the Lords.70.

---

1 The day refers to joy and night to sorrow.

पवन पूरिथ युस अनि वगे
तस बोन स्पर्शि बोछि न तेश ।
ति यस करून अन्तिह तगे
संसारस सुय ज्यथि नेछ[†] ॥७१॥

जो श्वासोष्वासरुपी घोडे को लगाम देकर मन वश में रख सकता है, उसे भूख और प्यास छू तक नहीं सकते। अतंकाल तक जा ऐसे ही रह सके, उसका जन्म सफल है और वह इस संसार में सुखी है ॥७१॥

He who inhales rightly the vital airs and controles them with the bridle, him neither hunger nor thirst can touch. He who can do this unto the end, his birth in this universe is fortunate.71.

पानस लोगिथ रुदुख म्यं चुह
म्यं चुह छाडान लूस्तुम दोह ।
पानस मंज़ यलि ड्यूठुख म्यं चुह
म्यं च्य त पानस द्यतुम छोह[§] ॥७२॥

मुझे मोहके तू छिप गया। तेरी तलाश में मेरा दिन बीता। मैं ने तुझे अपने आप में पाया। तुझसे मिलनेपर मैं फूले न समाई ॥७२॥

You remain absorbed in yourself and hidden from me. I passed the whole day in your search. When I saw you within myself, I gave to you and myself the unrestrained rapture of joy. 72.

† Lucky good. § Ecstasy, great joy.

मनस तु भव़सरस छु तु
कोप नेरिता नार् छोख ।
ल्यख लंज्यतांथ बो़ ना कुने
तुलि तुल तांथ तुलू ना केंह ॥७३॥

अपने मनको ही संसार रुपी सागर समझ ले, यदि तू इसे वश में न रखेगा तो कोप में (तेरे मुहं से) अपशब्द निकलेंगे- जैसे कि आग चिंगाडियां छूटती हैं। यह शब्द रहेंगे परन्तु मैं नहीं रहोंगी। यदि इनको सचाई की तुला में तोला जाय तो इनका वज़न कुछ भी नहीं होगा ॥७३॥

Look upon yonr mind as the ocean of existance. If yon donot keep it under control, but let it loose, then angry words will issue from your mouth in rage, as fire causes wounds. These words will remain but I will be nowhere. If they are weighed in the scales of truth, their weight is nothing.73.

तूर

यव़ (तुर) चलि तिम अम्बर हथता
बोछि यव़ गलि तिय आहार अन ।
चि़ता स्व पर विचा़रस प्यता
लु़न्तन यि दीह वन कावन ॥७४॥

जिनसे सर्दी दूर हो वही कपडे पहन। जिससे भूख दूर हो उतना ही अन खा। हे चित्त! सदा सुविचार(आत्मस्वरुप और ब्रह्म के चिन्तन) में लगा रह और इस देह को वन पशुओंका आहार जान ॥७४॥

Use only such apparel as will cause the cold to flee. Eat only so much food as will stop hunger. O mind! try to discern Self and the Supreme and recognize this body as the food for forest crows.74.

संसार नाम्य ताव तंचय
मूढन किचुय तावुनु आये ।
ज्ञाणु मुद्रा† छयं यूगियन किचुय
सु यूग कलि§ किञ परज़नु आये ॥ ७५ ॥

ससंारनामी गर्म कडाही मूढोंके लिए तपाई हुई है। ज्ञाणकी मुद्रा तो ज्ञणियोंके ही लिए है। इस मुद्रा को योगाभ्याससे ही पहचाना जाता है ॥ ७५ ॥

The world is just like a hot frying pan, which is heated for the foolish. The essence of true Knowledge is for the yogis and He is recognized only by constant practices of yoga .75.

सोबूर छुय ज्युर मरुछ़ तु नूनुय
ख्यनु छुय टयोठ तु ख्ययंस कुस? ।
सोबूर छुय सोनसुन्द् टूरुय
मोलु छुय थोद त हथंयस कुस ॥ ७६ ॥

सब्र या धैर्य ज़ीरा, मिर्च और निमक की न्याई है, जो खाने में कडुऐ हैं। भला इन्हें कौन खाए। धैर्य(क्या है मानो) सोने का टूर है जो वहुमूल्य है । भला इसे खरीदे कौन ? ॥ ७६ ॥

Patience is like zira, pepper and salt It is bitter to taste; who will take it? Patience is just like a golden bowl; it is very costly and who will purchase it?

† Hidden knowledge § Strong and constant practice.

स्वर्गु जामु वांविथ अलख्य[†] प्रोवुम
दग ललुनोवुम दयि सांजि प्रये ।
पोत ज़ानि वंथिथ मोत वुज़ुनोवुम
चेन्तु मालि कुलिस प्यठ न्यन्दुर छय ७७

स्वर्गीय (अलौकिक) वस्त्रोंको त्याग कर मैं ने अलख (सन्यास) को अपनाया । परब्रह्म के प्रेममें मैंने वेदनाए सहीं । प्रातः काल उठकर ही मैंने उसे जगा दिया । हे तात ! जाग भी ज़रा, वृक्षपर (ससांरके प्रपंचमें) तू सोया पडा है ॥ ७७ ॥

I gave up the rich celestial garments and took to a fakir's rags. In His love I bore the pain. Early in the morning before dawn I woke Him up. O father! take this as a hint, why do you sleep on a branch of a tree.77.

साहब छु बिहिथ पानय वानस
सारिय मंगान केंछाह दि ।
रोट[§] नो कांसिहुन्द रांछथ नो वानस
यि च्यं गछिय ति पानय नि ॥ ७८ ॥

परमात्मा खुद स्वयं दूकानपर बैठा है । सभी कुछ देनेको कहते हैं । रुकावट किसीकी नहीं, नहीं किसीकी दूकानकी रखवाली है । जो तू चाहे, स्वयं ही ले जाना ॥ ७८ ॥

He Himself is sitting as a dealer at the shop. All are asking for something. There is none to stand in any one's way. One may take anything he likes; there is no guard on the shop, whatever you want take that yourself.78.

† Sanyasi § Hinderence.

संसारस मंज़ बाग क्यथ शां रोज़य
रोज़िय परम शिव शम्भू अघूर
लोलि मंज बाग बय ललनावन
जिगरस मंजबाग करस गूर गूर ॥ ७९ ॥

ससांर में किसतरह रहूंगी ? यहां तो परमशिव ही रहेगा। उसीको मैं गोदमें लालन करुंगी और अपने हृदय में मैं उसे झुलाऊंगी ॥ ७९ ॥

How shall I remain in this universe? The Supreme Lord Shiva alone will remain here. I will take Him in my lap and sing a lullaby and will seat Him and love Him in the warm corner of my heart. 79.

शिन्यस[†] तु रवस[§] अंथ्य कुस रटे
कुस हथके रटे वाव।
युस पांच़ इन्द्रय च़ांटिथ च़ले
सुय रटे गटे रव[*] ॥ ८० ॥

शून्य और सूरज को कौन पकड सकता है? वायूको कौन पकड सकता है? जो पांच इंद्रियों (के विषयों) को काटकर भाग जायगा वही अंधेरेमें सूरज को (प्रकाश को) पा सकता है ॥८०॥

Who can catch with hand the void and the sun? who can catch the wind? One who can subdue the five senses, he can catch the sun in darkness i.e. can realize the Supreme Being. 80.

† Void § Sun * Sun, here the Supreme light.

दोद् क्या ज़ानि यस नो बने
गमुक्य जामु॑ हा वलिथ तने ।
गरु गरु फीरुस प्यंयस कने
ड्यूठुम नु कांह ति पननि कने ॥ ८१ ॥

जिसपर न वन आय, वह दर्दकी कथा जाने? मैं तो वेदना (गम) का लिबास पहन कर घर घर उसकी तलाश में फिरी, और हर जगह मुझ पर पत्थर बरसे (मेरा अनादर हुआ)। किसी को भी मैंने अपने पक्षमें न पाया ॥ ८१ ॥

He cannot understand the troubles of others, who is never himself involved in one. I went from door to door, putting on the garments of grief.† I was pelted with stones everywhere and did not find any sympathiser who could side me or console me.81.

हह§ निशि हाह द्राव शाह क्या गवुय
हुहस तु हाहस शाह चुय ज़ान ।
रुहु निशि मो॒र द्राव क्याह वुछुय
क्याह रुद् बाकय क्याह गव फान ॥ ८२ ॥

'हह' से 'हाह' निकला तो साँस क्या हुआ? 'हह' और 'हाह' प्राण, अपान को तू सांस जान ले। आत्मा जब शरीर से निकल पडा तो क्या देखा? शेष क्या रहा और नष्ट क्या हुआ? ॥ ८२ ॥

'Hah' came out of 'Hah' and what is breath? Understand that 'hah' and 'hah' is the breath. When the soul seperates from the body what is seen? What is left behind and what has disappeared?82.

---

† Garments of grief put when aggrieved in his seperation.
§ 'Hah' and 'Hah' refer to inhaling and exhaling of breath.

शहनि हुन्द् शिकार बाज़ क्यु ज़ाने
हांठ क्यु ज़ाने पोतरय दोद् ।
शम्हुच कदुर लश कति ज़ाने
मंछ्य कति ज़ाने पोम्पुरुच गथ ॥ ८३ ॥

शेरनी का शिकार वाज़ को क्या मालूम? वांझ स्त्री को मां की मामता का क्या ज्ञाण? लशकी लकडी शमा (दीपक) की कद्र क्या जाने? और (वेचारी) मखी परवानेकी गतिको क्या समझे? ॥८३॥

What can a hawk understand the prey of a lioness? What idea can a barren woman form of maternal love? What can a kairoo piece of wood understand the value of a candle-stick? Where does a fly know the self-sacrifice of a moth? 83.

लूभ मारुन सहज़ व्यचारुन
द्रोग† ज़ानुन कल्पन§ त्राव ।
निशि छुय तु दूर मो गारुन
शून्यस शून्याह मीलिथ गव ॥ ८४ ॥

लोभ को मारकर आत्मस्वरुप का विचार कर। दुर्लभ (परमात्मा का ज्ञान) को जान ले और कल्पना करना (खयाली पुलाव पकानना) छोड दे। वह तो तेरे समीप है उसे दूर न जान। वह मानो शून्य में शून्ये समा गया है ॥८४॥

Slay all desires and meditate on the nature f the self. The Knowledge of the Supreme is rare "nd of great price; abondon all your vain imainings. He is nearby donot search for him afar. A void has become emerged with the void.

† Difficult to be got. § Vain imaginings or building castles in the air.

रवमथ थलि थलि तांपीतन
तांपीतन उत्तम उत्तम देश ।
वरुण मथ लूकु गर अंचितन
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ८५ ॥

ूरज क्या थल थलको (हर एक वस्तु को) प्रकाशित नहीं करता ? या वह केवल अच्छे अच्छे देशों को ही चमकाता है? क्या वायूं घर र में प्रवेश नहीं करती ? इस उपदेश पर चिन्तन कर कि शिव की ाप्ति (ज्ञाण) तो बहुत ही कठिन है ॥ ८५ ॥

Does not the sun cause everything to glow verywhere? Does it cause to glow only good lands? Does not Varuna enter every home? Hardly n truth is Shiva to be found and therefore neditate on this doctrine.85.

ये गुरा परमेश्वरा
सद्भाव¹ भाव तु म्यं चुह ।
ज़ु ज़ानि उपनेय कन्दापुरा
हुह कवु तुरुन तु हाह कवु तोत ॥ ८६ ॥

ुरुदेव! आप परमगुरु(ईश्वरस्वरुप)हैं । कृपया मुझे सच्ची विद्या समझाइए । प्राण अपान दोनों एक ही स्थानसे पैदा होते हैं तो 'हह' यों सर्द है, और 'हाह' क्यों गर्म? ॥ ८६ ॥

O my teacher! You are as God to me. Kindy explain to me the inner meaning of the Reality. There are two breathings both, rising from the bulb. Why then is 'Hah' cold and 'Hah, hot?86.

¹ Tbe Supreme Knowledge.

अनाहत स्वस्वरुप शून्यालय
यस नाव ना वर्ण ना रुप ना गोत्र ।
अहं निनाद बिन्द तु यवोन
सुय दीव अश्वार प्यठ चेडयस ॥ ८७ ॥

सदा ही शून्यमें रहनेवाले 'अनाहद' का न कोई नाम है, न रंग है न रुप है और न गोत्र । वह स्वयं ही 'नादबिन्दु'आदि की ध्वनियों बदलता रहता है । वही एक देवता है जो उस पर सवार होता ॥ ८७ ॥

The ever unobstructed sound, whose abode is always in the void and who has no name, no colour, no shape and no lineage; he is the sound for the dot created by His own reflection. That alone is the God that will mount upon him.87.

वाक मनस कोल अकोल ना अते
छ़ोपि मोदरे अति ना प्रवेश[†] ।
रोज़न शिव शक्त ना अते
म्वतुयय[§] कुहं तु सुय उपदेश ॥ ८८ ॥

मन को समझा कि वहां पर उच्चकुल या नीचकुल का भेद नहीं । वहां पर मौनमुद्रा का प्रवेश नहीं । न वहां शक्ति रहती है न शिव । जो कुछ शेष रहे वही उपदेश है ॥ ८८ ॥

Tell your mind that there is no highness or lowness (family distinction) there. There is no entrance there either by silence or by mystic attitude. Neither Shiva nor Shakhti remain there and if anyone remains that is the true doctrine.88.

† Entrance § What remains behind.

वोथू रैणया अर्चुन सखर

अथि अल पल वखुर हथथ ।

योदवनय ज़ानख परम पद[†]

अन्दर हिशीखर ख्यंशीखर हथथ ॥ ८६॥

उठ देवी! पूजा की तैयारी कर पूजा का सारा सामान हाथ में ले । यदि तू ब्रह्मपद को जानले तो तान्त्रिक देवियों के साथ बैठकर पूजा कर ॥ ८६ ॥

Arise, O. Lady! make preparation for the worship keeping in hand all the peraphernalia of worship. If you know the highest Eternal Syllable, then take and eat them in company with Tantric worshippers. 89.

शिव वा केशव वा जिन वा

कमलज़नाथ[§] नाम दारिन युस ।

म्यं अबलि कास्यतन भवरुज़*

सुह वा सुह वा सुह वा सुह ॥ ९० ॥

शिव हो, केशव हो वा जिन हो । कमलज़नाथ (विष्णु) ही क्यों न उसका नाम हो (जो कुछ भी उसका नाम हो) मुझ अबला की भवरुजा (संसारिक पीडा) को वह दूर तो करे, चाहे शिव हो केशव हो, जिन हो या विष्णु हो ॥ ९० ॥

Whether He bears the name of Shiva, or Keshav or Jin or the Lotus-born Lord, He may take away from me, a poor woman, the disease (attachment) of the world. Then He may be He or He or He or He. 90.

† Brahma § Vishnu. * Attachment to the world.

सहज़स शम[†] तु दम[§] नो गछ़े
इछ़ि नो प्रावख मुक्तिद्वार ।
सलिलस लवन ज़न मीलिथ ति गछ़े
तोति छु दुर्लभ सहज़ु विचार ॥ ९१ ॥

सहज़(ईश्वर) हमसे शम या दमकी अपेक्षा नहीं रखता केवल इच्छा मात्र से ही तू मुक्तिका द्वार नहीं पाएगा चाहे तू पानी में निमककी तरह भी उसके ध्यान में लय हो, परन्तु उसका विचार करना (पहचानना) कठिन ही है ॥ ९१ ॥

God does not require from us meditations and austerities. By mere wish you cannot reach the door of final release. You may be absorbed in His contemplations as salt is absorbed in water, even then it is very difficult to discern the nature of the Supreme. 91.

संसारस आयस तपसे
बोधप्रकाश लोबुम सहज़ ।
मर्यम न कुहं तु मरु नु कांसे
मरु नेछ[‡] तु लसु नेछ ॥ ९२ ॥

संसार में मैं आई और तपस्यासे मुझे आत्मबोध हुआ । कोई मरे तो मुझे क्या ? मैं मरु तो किसी को क्या ? मैं मरी तो अच्छा ही है और जीवित रही तो फिर भी अच्छा है ॥ ९२ ॥

I came into the world of birth and rebirth and through asceticism gained the self illuminating light of Knowledge. If any one dies, it is naught to me and if I die it is naught to any one. It is good if I die and it is good if I live long. 92.

† Meditation § Austerities ‡ Good.

हथथ कंरिथ राज्य फेरिना
दिथ करिथ तृपि[†] ना मन ।
लूभ विना ज़ीव मरि ना
ज़ीव न्यथ मरितांय सुय छुय ज्ञान ॥ ९३ ॥

राज्य पाकर उसका शासन करने से तो मन नहीं मरता, नहीं वह किसीको दान देकर तृप्त (शांत) होता है। निर्लोभी (निष्काम) मनुष्य तो अमर है, जो जीवित होते हुए भी मुरदा जैसा रहता है, वही सच्चा उपदेश है ॥ ९३ ॥

If you get a kingdom and rule it, there will be no respite, and if you give it to another, still there is no content in your heart. The soul that is free from desire will never die; if, while it is yet alive, it dies, then that alone is the true Knowledge. 93.

शील[§] तु मान[*] छुय पोञ क्रञिय[‡]
ग्वछि यंम्य रोट मङ्गयुछ वाव ।
होस्तुय युस मस्तवालु गंडे
तिह यस तगे सु अदु निहाल ॥ ९४ ॥

शील और मानकी (एक साथ) रक्षा करना टोकरे में पानी धरना है। जा शक्तिशाली वायुको मुट्ठी में बंद कर सके, हाथी को अपने सिर के बालसे बांधे, वही शायद ऐसा करनेमें निहाल (सफल) हो सकता है ॥ ९४ ॥

Integrity and high repute are but water carried in a basket. If some mighty man can grasp the wind with his fist, if he can tether an elephant with a hair, he may be successful and may retain integrity and high repute. 94.

† Attain contentment. § Integrity. * High repute. ‡ A basket full of holes that cannot retain water.

शिव गुर ताय केशव पलनस
ब्रह्मा पाइर्यहथन वोलस्यस।
योगी योगकलि पर्ज़ान्यस
कुस देव अश्ववार ब्यठ चेडयस ॥ ९५ ॥

शिव घोडा है, विष्णु काठी और पायदानपर ब्रह्मा है। योगीजन योगकी कला से इसे पहचानते हैं। कौन देवता है जो इस (घोडे) पर चढ सकता है ॥ ९५ ॥

Shiva is the horse and Vishnu is the saddle and upon the stirrup is Brahma. The Yogi recognizes Him by the art of his Yoga. Who is the god that will mount upon him (horse) as the rider? 95.

श्य† वन चांटिथ शशिकल वुज़ुम
प्रकृत हुज़ुम पवन् सूतिय।
लोलकि नार—सूत्य वांलिञ्ज बुज़ुम
शंकर लोबुम तमिय सूतिय ॥ ९६ ॥

(कामक्रोधादि) छः वनोंको पार करके (ब्रह्मरन्ध्रस्थ) चन्द्रकला जाग उठी और (प्राणायामसे नियमित) पवन प्राणवायु द्वारा मैंने प्रकृति सारे संसार को भस्म कर डाला। प्रेमकी आग से मैंने अपने कलेजेको भून डाला। तभी तो शंकरको मैंने पालिया ॥ ९६ ॥

I cut my way through the six forests (by controlling my vital airs) and then I awoke by the digit of the moon. The whole material world dried up within me. I parched my heart with the fire of love for Him, and then did I find Shiva by doing so. 96.

† Lust, anger, desire, dellusion, conceit and mind.

स्य मातारुप्य पय दिये
स्य भार्या रुप्य करि विशेश† ।
स्य माया–रुप्य अन्ति जुव हयये
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ६७ ॥

वही मातारुप से दूद देती है, वही भार्यारुपसे विशेश रुप धारण करती है। मायारुप धर कर वहीं अन्त में संहार करती है। शिव दुर्लभ है अतः इसी उपदेशका चिन्तन कर ॥ ६७ ॥

The same woman is a mother and gives milk to her baby. The same woman is a wife and has her special character. The same woman is a deceiver and ends your life. Hardly in sooth, is Shiva to be found, therefore meditate on the doctrine.97.

स्योय शील§ छय पटस तु पीठस
स्योय शील छय उत्तम देश ।
स्योय शील छय फेरवनिस ग्रटस
शिव छुय क्रूठ तय चेन उपदेश ॥ ६७ ॥

वही शिला सडक पर है और वही पीठमें, उसी से पवित्र स्थान वनते हैं। पुनः वही पत्थर घूमनेवाली चक्की का पाठ है। शिव तो दुर्लभ है अतः इसी उपदेश का चिन्तन कर ॥ ६८ ॥

The same stone is in the road, in the pedastal and in the sacred place. The same stone is the turning mill. Shiva is very difficult to be obtained, take this as a hint for your guidance & meditate upon this doctrine. 98.

---

† A special character § Stone.

लल व चायस स्वमनु बागु बरस
वुछिम शिवस शक्त मीलिथ तु वाह ।
तति लय कारुम अमृतु सरस
ज़िन्दय मरस तु म्यं करि क्याह ॥ ९९ ॥

मैं लल अपनी आत्मारुपी उपवन मैं घुसी । अहो! वहां शिवको शक्ति से मिला हुआ पाया । वहीं मैंने अमृतसर में अपने आपको लय किया अब मैं जीवित होते हुए भी मरी हुई सी हूँ, भला मुझे कोई क्या कर सके ? ॥ ९९ ॥

I, Lalla, entered through the door of the garden of my soul. Lo! I saw there Shiva and Shakhti seated together. I became absorbed there in the lake of nector. Even though alive, I shall be dead and what can existence do unto me? 99.

लरः लंज़ुम मंज मांदानस
अंन्द्य अंन्द्य करिमस तंकियतु गाह ।
सु रोज़ि यति तय बो गछ़ पानस
वोज़ गव वानस फालव दिथ ॥ १०० ॥

मैदान के मध्यमें मैं ने एक मकान बनवाया और उसको चारों ओरसे सजाया वह तो यहीं रहेगा और मैं चली जाऊंगी मानो दूकानदार दूकानको बन्द करके चला जाय १००

I contsructed a house in the middle of a plain and I decorated it on all sides with many a beautiful and precious things. The house will remain here and I shall have to go, just as a shop keeper closes his shop and goes away. 100.

THE END.

In Verse 5	line 10	read for	But death	But life and death
In Verse 6	line 11	read for	begining	beginning
,, ,,	,, ,, 12	,, ,,	will do He	will He do
,, ,, 21	,, 5	,, ,,	मरेगा	मारेगा
,, ,, 23	,, 4	,, ,,	सर्थ	सुय
,, ,, 24	,, 3	,, ,,	शशि रस	शशि रसु
,, ,, ,,	,, 4	,, ,,	छ्वपि	छुपि
,, ,, 25	,, 11	,, ,,	subdned	subdued
,, ,, 31	,, 10	,, ,,	Knowladge	Knowledge
,, ,, 30	,, 2	,, ,,	सर्वंक्रिय	सर्वं क्रय
,, ,, 33	,, 6	insert दीप	before	प्रज्वलित
,, ,, 35	,, 4 & 7	read for	शिाव	शिव
,, ,, 36	,, 7	,, ,,	गहँ	गईं
,, ,, 39	,, 5	,, ,,	,,	,,
,, ,, 43	,, 1	,, ,,	चि्ल	चित्त
,, ,, 45	,, 8	,, ,,	naval	navel
,, ,, 57	,, 12	,, ,,	tbe	the
,, ,, 58	,, 1	,, ,,	धूरि	तरि
,, ,, 60	,, 7	,, ,,	द्रूार	द्वार
,, ,, 65	,, 8	,, ,,	,,	,,
,, ,, ,,	,, 14	,, ,,	qnarrelsome	quarrelsome
,, ,, 70	,, 6	,, ,,	द्वूैतका	द्वैतका
,, ,, 74	,, 1	,, ,,	तुर	तर
,, ,, 85	,, 4	,, ,,	शिाव	शिव
,, ,, 89	,, 7	,, ,,	वठकर	बैठकर

Printer

Some of the Publications of the

TRUST PUBLISHING HOUSE

(An institute for encouraging Hindi Literature)

MAHABIR BAZAR, SRINAGAR.

1.	Lalla Vakyani.	Hindi-English Edition	I	0 - 4 - 0
2.	" "	Urdu Edition	I	0 - 2 - 6
3.	" "	" "	II	0 - 2 - 6
4.	" "	" "	III	In the Press
5.	Shree Rama wani	Hindi Edition		0 - 3 - 0
6.	Shree Krishna wani	" "		0 - 3 - 0
7.	Shree sundar wani	" "		0 - 3 - 0
8.	Nitya Karma Vidhi	" "		0 - 1 - 6
9.	Richkapr	Sanskrit "		0 - 2 - 6
10.	Bhawani Sahasranam	" "		0 - 2 - 0
11.	" "	Urdu "		0 - 1 - 0
12.	Mahimnapar	Sanskrit "		0 - 0 - 9
13.	"	Urdu "		In the Press
14.	Panchastavi	Sanskrit "		Do
15.	"	Urdu "		0 - 1 - 0
16.	Ragnyastotra	Hindi - Urdu "		0 - 1 - 6
17.	Vatka - Pooja	Urdu "		0 - 0 - [illegible]
18.	Life of Rishi Pir	" "		0 - 1 - 6
19.	" " Nund Rishi	" "		0 - 1 - 6

K. N. Charagi.
Proprietor